दुनिया के अंतिम दिनों में क्या होने वाला है?

बाइबल साफ़ बताती है कि इस संसार का एक दिन अंत आएगा। और जो चिन्ह हम आज देख रहे हैं, वे दिखाते हैं कि हम सचमुच अंतिम दिनों में जी रहे हैं (मत्ती 24:3–14; 2 तीमुथियुस 3:1–5)।

लेकिन बहुत से लोग आत्मिक रूप से अन्धे हैं। शैतान ने सच्चाई को उनसे छिपा दिया है (2 कुरिन्थियों 4:4)। इसलिए वे केवल इस संसार के आनंदों में जीते हैं, यह जाने बिना कि अचानक परमेश्वर का न्याय आने वाला है—जैसा नूह और सदोम के दिनों में हुआ था (लूका 17:26–30)।

दुनिया के अंत से पहले कौन-कौन सी बड़ी घटनाएँ होंगी?

1. रैप्चर (विश्वासियों का उठा लिया जाना)

सबसे पहली महत्वपूर्ण घटना होगी रैप्चर—जब यीशु मसीह आएँगे और अपने सच्चे विश्वासियों को स्वर्ग में उठा ले जाएँगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:16–17; यूहन्ना 14:2–3)।

यह परमेश्वर की दया का प्रमाण है कि वह अपने लोगों को पृथ्वी पर आने वाले भयानक न्याय से पहले हटा लेगा (1 कुरिन्थियों 15:51–52)।

यदि रैप्चर आज हो जाए, तो बाइबल की भविष्यवाणी के अनुसार—विशेषकर दानिय्येल 9:24–27—पृथ्वी के पास लगभग सात वर्ष ही शेष रह जाएँगे। इस

अवधि को “क्लेशकाल” कहा जाता है।

2. मसीह-विरोधी का प्रकट होना और बड़ा क्लेशकाल

रैप्चर के बाद दुनिया पर शासन करने के लिए मसीह-विरोधी (Antichrist) उठेगा। उसका शासन बहुत कष्टों और उत्पीड़न से भरा होगा—इसे ही महान क्लेश कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 13; मत्ती 24:15–21)।

वही “उजाड़ने वाली घिनौनी वस्तु” को खड़ा करेगा (दानिय्येल 9:27; मत्ती 24:15)—जो कि एक निन्दात्मक घटना होगी और परमेश्वर के न्याय की शुरुआत का संकेत देगी।

यह समय पृथ्वी पर रह गए लोगों की आस्था को परखेगा और यह दिखाएगा कि परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कितना गंभीर परिणाम लाता है।

3. परमेश्वर के न्याय

इस क्लेशकाल में परमेश्वर के सात कटोरों का प्रकोप पृथ्वी पर उँडेला जाएगा (प्रकाशितवाक्य 16)। ये दण्ड उन लोगों के लिए होंगे जिन्होंने पश्चाताप नहीं किया और परमेश्वर की सार्वभौमिकता को स्वीकार नहीं किया।

यह reminding है कि परमेश्वर पवित्र और न्यायी है, और पाप सदा के लिए दण्ड के बिना नहीं छूट सकता (रोमियों 1:18)।

4. राष्ट्रों का न्याय

क्लेशकाल के अंत में यीशु प्रत्यक्ष रूप से लौटेंगे और राष्ट्रों का न्याय करेंगे—जैसे चरवाहा भेड़ों और बकरों को अलग करता है (मत्ती 25:31–46)।

भेड़ें—वे जिन्होंने विश्वास और धार्मिकता के साथ जीवन जिया। बकरे—वे जिन्होंने परमेश्वर को अस्वीकार किया।

यह न्याय हमें सिखाता है कि आज्ञाकारिता, प्रेम और करुणा का जीवन कितना आवश्यक है (याकूब 2:14–26)।

उसके बाद क्या होगा?

5. मसीह का 1,000 वर्षों का राज्य

इसके बाद यीशु पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेंगे और हज़ार वर्षों तक शान्ति और धर्म के साथ राज्य करेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:1–6)। इस

अवधि में शैतान बाँध दिया जाएगा ताकि वह किसी को धोखा न दे सके।

यह समय परमेश्वर के उस वादे की पूर्ति है जिसमें वह अपनी सृष्टि को फिर से बहाल करने और पूर्ण शान्ति लाने की प्रतिज्ञा करता है (यशायाह 11:6–9; भजन संहिता 72)।

6. शैतान की अंतिम हार

हज़ार वर्षों के बाद शैतान थोड़े समय के लिए छोड़ा जाएगा। वह फिर से लोगों को भटकाने की कोशिश करेगा, लेकिन अंत में उसे सदा-सर्वदा के लिए आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:7–10)।

यह बुराई पर परमेश्वर की अंतिम विजय है।

7. महान श्वेत सिंहासन का न्याय

इसके बाद अंतिम न्याय होगा—जहाँ सभी मरे हुए लोग उठाए जाएँगे और अपने- अपने कामों के अनुसार न्याय पाएँगे (प्रकाशितवाक्य 20:11–15)। जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाए जाएँगे, वे आग की झील में डाल दिए जाएँगे।

यह हमें दिखाता है कि परमेश्वर पूर्णतया धार्मिक है।

8. नया आकाश और नई पृथ्वी

अंत में परमेश्वर नया आकाश और नई पृथ्वी रचेंगे—जहाँ वह सदैव अपने लोगों के साथ रहेगा (प्रकाशितवाक्य 21:1–4)।

“वह उनकी आँखों के सब आँसू पोंछ देगा; वहाँ न मृत्यु रहेगी, न शोक,
न रोना, न पीड़ा।”
(प्रकाशितवाक्य 21:4)

वहाँ कोई दुख, बीमारी या मृत्यु नहीं होगी।

यही तो विश्वासियों की सच्ची और अनन्त आशा है (यूहन्ना 3:16; रोमियों 8:18–25)।

हमें अभी क्या करना चाहिए?

क्योंकि ये बातें किसी भी समय पूरी हो सकती हैं, इसलिए हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए।

“इस कारण जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु
किस दिन आएगा।”
(मत्ती 24:42)

इसलिए हम पवित्रता, विश्वास, प्रेम और आज्ञाकारिता के साथ चलें, ताकि हम परमेश्वर के अनन्त राज्य में स्थान पाएँ (2 पतरस 3:11–14)।

Share on:
WhatsApp

Print this post